परिशिष्ट

१. मन्नू भंडारी का रचना संसार
२. संदर्भ ग्रंथ सूची

परिशिष्ट : १

मन्नू भंडारी का रचना संसार

कहानी संग्रह

१) मैं हार गई, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९५७.
२) तीन निगाहों की एक तस्वीर, श्रमजीवी प्रकाशन, इलाहाबाद,
३) यही सच है, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९६६
४) एक प्लेट सैलाब, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९६८
५) त्रिशंकु, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९७८
६) श्रेष्ठ कहानियाँ, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९८७
७) मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल अॅन्ड सन्स, दिल्ली

उपन्यास

१) एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के सहयोग से) - राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, १९६१
२) आप का बंटी, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९७१
३) स्वामी, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, १९८२
४) महाभोज, राधाकृष्ण-वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९७९

नाटक

१) बिना दीवारों का घर, अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९६६
२) महाभोज (नाटयरूपांतर) १९८३

किशोरोपयोगी साहित्य

१) आँखो देखा झूठ (बाल कहानियाँ), अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९७६
२) कलवा (बाल उपन्यास), अपार प्रकाशन, दिल्ली, १९७१

परिशिष्ट : २

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. आधुनिक कहानी का परिपार्श्व - लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद-३, १९६६ प्रथम संस्करण

२. आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में काममूलक संवेदना - डॉ. श्रीराम महाजन, चिंतन प्रकाशन, कानपूर-२, १९८६ प्रथम संस्करण.

३. आधुनिक हिंदी कहानी के आधार स्तंभ - डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र, अजब - पुस्तकालय, कोल्हापुर, १९७५ प्रथम संस्करण.

४. आधुनिक हिंदी नाटक चरित्र सृष्टि के आयाम - डॉ. लक्ष्मीराय, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, १९७९ प्रथम संस्करण

५. आधुनिक हिंदी नाटकों में नायक - डॉ. श्याम चूर्मा, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, १९७८ प्रथम संस्करण

६. औरों के बहाने (संश्लेषण) - राजेंद्र यादव, अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली १९८५ तृतीय संस्करण

७. कथाकार मन्नू भंडारी - अनीता राजूरकर, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, १९८७ प्रथम संस्करण

८. मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य - प्रा. किशोर गिरडकर, विश्वभारती प्रकाशन, नागपूर, १९८५ प्रथम संस्करण

पत्रिका

१. हंस - अगस्त १९८६ ।

(1)

मन्नू भंडारी

103 हौज़ ख़ास अपार्टमेंट्स
नई दिल्ली 110016

प्रिय प्रदीप,

तुम्हारे पत्र (जवाबी लिफ़ाफ़ों के साथ) बराबर मिलते रहे। व्यस्त मैं कतई नहीं थी, पर अस्वस्थ थी, अस्पताल में ही। यहाँ कोई देखभाल करने वाला नहीं था तो बीमारी में कलकत्ता चली गई। नवम्बर के शुरू में लौट तो आई पर रोगमुक्त होकर नहीं। पहले तो मेरी मानसिक स्थिति ही इतनी गड़बड़ाई हुई थी कि कोई बात दिमाग में टिकती ही नहीं थी... फिर धीरे-धीरे रोग मुक्त हो गया। 8 जनवरी से कॉलेज जाना शुरू किया और अब मैं स्वस्थ हूँ। जो 10 K.G. वजन कम हुआ वह तो अभी नहीं बढ़ा, पर कमज़ोरी नहीं है। दिन भर नींद घेरे रहती है और पढ़ने लिखने का कोई काम [illegible] कर पाती। आज दिनभर बैठकर अस्पताल से लेकर अब तक की चिट्ठियाँ लेकर बैठी हूँ, कितनों के जवाब लिख पाती हूँ।

तुम्हारी सामग्री [illegible] विशेषांक की एक प्रति [illegible] है। यह प्रकाशन कार्य [illegible] है। मेरे पास कोई प्रति निकली तो मैं भेज दूँगी। 'बंटी', और 'एक [illegible], एक [illegible]' को

→

लेकिन कतई परेशान मत होओ क्योंकि काफी ~~वर्षों पहले~~ राजपाल वालों ने इस बीच की कुछ कहानियाँ चुनकर दो पॉकेट बुक छापी थीं। इसमें कोई नई कहानी नहीं है मेरी सारी कहानियाँ पाँच संकलनों में ही हैं। दो कहानियाँ बाद की एक हिन्दी में और एक 'धर्मयुग' में 'अंकुश' नाम से छपी थी। यह बहुत पुरानी बात है, इसकी cutting सम्भाल कर नहीं रख सकी इसलिये संकलित नहीं हो सकी।

जहाँ तक मेरे साहित्य पर आलोचनात्मक साहित्य का प्रश्न है, उसे भी मैंने कभी ~~कभी~~ एकत्रित करके नहीं रखा। इन सब मामलों में बहुत लापरवाह रही हूँ लेकिन यह निश्चित है कि काम बहुत हुआ है। थीसिस छापने वाले प्रकाशक आजकल नहीं मिलते, इसलिये प्रकाशित तो नहीं हुआ -- पर तीन चार पुस्तकें आई हैं। तुम एक पत्र राधाकृष्ण प्रकाशन वालों को लिखो। मैंने अपनी सारी पुस्तकें बेचने के लिये उनको दे दी हैं, उनको आलोचनात्मक पुस्तकों की भी थोड़ी जानकारी है वे कुछ मदद कर सकेंगे। पत्र श्री अशोक माहेश्वरी के नाम लिखना। पता है 2/35 अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

मैं सोचती हूँ कि तुम्हें पुस्तकें पाने

(3)

मन्नू भंडारी

पर ज़्यादा सामग्री तो मिली नहीं होगी। मैं इस बात से तो सहमत नहीं हूँ कि मेरी कहानियाँ अधिकतर नारी-समस्या पर केन्द्रित हैं, लेकिन इतना ज़रूर है कि सामाजिक समस्याओं को भी नारी के एंगिल से उठाया है। 'सज़ा' न्याय-व्यवस्था पर टिप्पणी है पर पूरा पर एक एक लड़की के एंगिल से लिखी गई है। 'त्रिशंकु' भी बीच की पीढ़ी के विकसित व्यक्तित्व की कहानी है पर सारे निर्णय मां-बेटी के माध्यम से उजागर हुए हैं। अनेक कहानियों के उदाहरण दे सकती हूँ। पुरुष पात्र तो मेरी कहानियों में बहुत कम हैं (महत्वपूर्ण पात्र) हाँ, तीसरा हिस्सा, तीसरा आदमी, नायक-खलनायक विदूषक के पात्र महत्वपूर्ण हैं या फिर स्त्री-सुबोधिनी का नायक। यों कुछ पत्र तो मिल जाएँगे लेकिन पूरे शोध-प्रबंध के लिये? काम पूरा हो तो तुम्हारा काम देखने को उत्सुक हूँ।

तीन किताबों की एक नयी सेट भेजने की कोशिश करूँगी पर तुम उसे लौटा देना ... क्योंकि re print करवाने के लिये भी एकाध पुस्तक तो चाहिए न!

शुभकामनाओं सहित सस्नेह

मन्नू भंडारी

103 हौज़खास अपार्टमेंट्स
नई दिल्ली-110016
27.2.89

प्रिय प्रदीप,

तुम्हारा पत्र मिला। शोध के लिये तुम्हारा विषय चयन भी लगा कि कुछ हलका सा है। कुछ ऐसा विश्लेषण करो कि एक महिला पुरुष-पात्रों को कहाँ तक प्रामाणिक रूप से चित्रण कर पाती है।

मेरी सारी कहानी-संग्रह एक ही पुस्तक में उपलब्ध हो जायेंगे। बहुत संभव तो है भी नहीं, कुल मात्र पचास-पचपन कहानियाँ हैं, जो पाँच संकलनों में संकलित हैं। हाँ, एक कहानी 'नायक, खलनायक, विदूषक' जीवित में ईश के अगस्त '86 के अंक में छपी थी - वह तुम्हारे विषय की दृष्टि से महत्वपूर्ण है - उस अंक को भी तुम कहीं पुस्तकालय से उपलब्ध कर सकते हो, क्योंकि ईश वहीं से प्रकाशित होता है। एक दो कहानियाँ ऐसी भी हैं जो संकलनों में नहीं आई हैं - उनका कुछ पुस्तक बनाने की कोशिश करूँगी! मेरा पहला [illegible] नया संकलन पढ़ने का काम करो - नयी बातें बाद में।

पता है — अक्षर-प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2/36 अन्सारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली

शुभेच्छु
मन्नू भण्डारी

110002

KOLHAPUR
3-3
HRS

15
भारत INDIA

श्री प्रदीप मी. लाड
1901 'सी' वार्ड
बिन्दु चौक
कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

पिन PIN 416002